

१७६

घण्टा स्थापन विधि
घण्टा स्थापन विधि

3471

ASHA ARCHIVES

हेनवीगन्धु॥ कीदृशस्वभयहस्यनाड
 सूर्यगतस्यत्र॥ कन्याकीटिसहस्रस्य
 यदयद्यच्छलरुलम्॥ वृत्तिघट्टादा
 नरुलम्॥ ॥ त्रुडयामलावायश्चेववि
 षाधैद्यद्यधवायमहुरुले॥ वादयित्वागुद्वी
 यमहायानकनासर्ज॥ ॥ विष्णुसानेगन्धु
 ॥ निष्पन्नेमिदिकेकाभ्यद्यद्यधवायमहुरु
 रुः॥ त्रुन्यथानेवसिद्धिःस्यात्कूटारुवनि
 यागिनी॥ ॥

त्रुथद्यद्यधस्कापनविधि॥ ॥
 यथाकविभाननकृष्णद्विकर्मवाकल
 धमर्चनेवाकावयन्॥ यथाकर्म
 त्वंकावयन्॥ ॥ ततोद्यद्यधमानी
 य॥ नमस्तुनादित्रुमिलीहन्ना
 दिकर्मकावयन्॥ यद्यधचतुसं
 स्कापंकावयन्॥ यथागवययथाभूत
 मिथ्यजलसर्वोवधीमृनिडोषधीनी

पुष्पक पुष्पकं स्नानं वेदेन कान
थेन ॥ पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः
न ॥ गङ्गा जलन ॥ ॥ गिरि गिरि न ॥
धन ॥ अष्ट सगन्ध सिन्दूर न लप
थेन ॥ हि न दध्नि गिरि लक दृष्टि दत्ता
॥ यूप यूप दत्त वस्तु न वेष्ट यन ॥ ॥
मूल गम मतिः अथान वद्र वति धी
मूल न वादनी यश्च दनी माला
मनु सना दनी नमा सा मनु न

अष्ट गन सनं वा ^x ~~अष्ट~~ ^x मनुमा द ॥
वाग्नि धवाभिर्क वायु पुष्पक ॥
धयेन ॥ ॥ अष्टोष्टाष्ट पुनिका ॥
मागृ कान्या भेन ॥ ॥ स्नाना
दि चन्द्र नाद न उय दौ हथे ॥ न्या
सादि जला द्य पात्र पूजा ॥ अष्ट पू
जार्त्त ॥ ॥ गङ्गा यष्ट पूजा ॥ अष्ट
वेष्ट फेन मष्ट ॥ ॥ यमर्त्त ॥ ॥

ASHA ARCHIVES

3471

ASHA ARCHIVES

3471

ॐ वन्दे वन्दे स्ववन्दे मित्रु वननमिग
वदु काये कनालः गुंजा हानं विरुष
गाधनमृदु वादं सूवेने हनि वदु क
रुं सयप्र षं खग गुया चक्रायुध सं
युनं वं षी वादन के ठ रुः निप्रकलो
शीत्रादिद्यष्टा मृकु ॥ ग्रावाहनादि
मृदा ॥ ॥ पाशादिचन्दनदूषदीप
ने वंश ॥ गुयां कुलि ॥ ॐ द्रौं ऊय धनी
मनुमान स्वाहा ॥ मूल ॥ वगुङ्गा ॥ ५

ॐ हंसः सः सः हं षीं पा पूरा ॥ वलिमृदा
मर्बत्र ॥ ॥ जाय ॥ क्षीप्र ॥ ॐ गुं रु
नमः ॥ वादनमिद्यष्टा युक्टा हहास
जका नु के मनु महापि ॥ चं हकि
कटाक्षे ॥ विप्रुर्लो नानादि वाशीप्र
कटादि नार्द ॥ याया हमिति नृग
नमदि ॥ ॥ रुलादि धे के श्रानतिप्र
निष्ठा ॥ ददिष्ट ॥ ॥ उत्तरु वाय ॥
ॐ नृद्य वा नाह ॥ मासा रु भ मासखा
दि ॥ ॥ १४१ स्वलाहि समा युक्ती महाद्य

धाम महासुखा- कौंठ्यं लाह मायि वा
धिनिर्विप्रोयाहिवालयं ॥ घट्टक
धृगधामोमानहन्धुगीवल्लहः डि
वगुलीवल्लहत्वालिबलाकवश
चिन्म ॥ ॥ एतन्नाम सकलपनिवानक
सयथाधामो कुरुल प्राप्ति कामनेया सर्वपा
यक्षयत्तुलीनिवपुनिगमनाष्टयूनसखाव
सेनावकिन्नदेवसुखसमानसुखयुक्तः पुश्च
लीनसुलीलादि श्रीमानुलीनिव वल्लहत्वे
प्राप्ति कः वशयूनयोत्रयनिवेन त्वाद्यनिमि
नद्रविशनित्रुक्तत्वे च धर्मसुखसुखलीलाय

र्योऽहं वल्लहपुष्टिविवृद्धिः हर्षवदस्मीयक
ल्यायूनसहस्रसखाकचगुर्द्धं स हमाव
किन्नयथासुखलिबपुनवाऽहं नतपुनव
नविचनऽहं नमहीनलप्राप्तिपूर्वक
धृष्टवर्द्धं नमयनमसुखयूनलीकानुस
विनकामनार्थ ॥ ॐ मीकाऽधमयिधधर्म
लीहृष्टहृत्तयूनीमहासुखीविष्णुदेवतान्
लीत्रुमुक्तदेवतायेतुस्यमहसंप्रददन् ॥
दक्षिधाम ॥ ॥ यथाकविधमनदेवताप
य ॥ ॥ यथाकविधिवगुकार्यसमाय ॥ ॥
सूर्यसाक्षिः ॥ ॐ निधधामधमनसुसमाय ॥ ॥